SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

'' भारतीय दर्शन एवं सामाजिक दृष्टिकोण का दार्शनिक अध्ययन''

अवधेश त्यागी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ0 प्रियंका शर्मा
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

भारत के वर्तमान सामाजिक जीवन की तथा उसके गुण–दोषों की विवेचना बहुत व्यक्तियों द्वारा हुई है तथा होती रहती है, परन्तु भारतीय समाज–व्यवस्था का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन इतने कम विद्वानों ने किया है कि आश्चर्य होता है।[1] इस कारण आगे दिये विचारों का समर्थन अधिकांशतः शास्त्रों के ही उद्धरणों के आधार पर है तथा केवल प्रास्ताविक विवेचना में ही जहाँ आवश्यक और सम्भव प्रतीत हुआ है वहीं कुछ विद्वानों के उद्धरण दिये गये हैं।

भारतीय समाज–रचना दर्शन पर आधारित है। इसीलिये धर्म के जितने भी ग्रन्थ हैं, सबमें इहलौकिक व्यवस्था के साथ–साथ पारलौकिक उन्नति का, ब्रह्म का तथा ब्रह्म–जीव एकता का वर्णन है। वेदों में अथर्ववेद को तो ब्रह्मवेद कहा ही गया है परन्तु अध्यात्म का वर्णन अन्य वेदों में भी उपलब्ध है।[2] वेदों के अतिरिक्त प्रत्येक पुराण में भी सभी धर्मों के वर्णन के साथ मोक्षधर्म का भी पूरा वर्णन किया गया है। स्मृतियों में मनुस्मृति का प्रारम्भ सृष्टि उत्पत्ति से होता है और मध्य में सम्पूर्ण धर्मों का वर्णन करते हुए सबके अन्त में मोक्षधर्म का विवेचन किया गया है। हारीतस्मृति के भी विवरण की यही योजना है। याज्ञवल्क्यस्मृति में सभी वर्णों और आश्रमों के धर्मों का वर्णन करने के पश्चात् अन्त में अध्यात्म–तत्त्व का वर्णन किया है। ऐसा ही दक्षस्मृति में भी है। इस तथ्य को डॉ. राधाकमल मुकर्जी ने स्वीकार किया है। वे कहते हैं कि "जीवन की भारतीय योजना में सभी व्यक्तियों और उत्तरदायित्वों का निर्धारण अन्ततः दर्शन से ही होता है,

जिसमें आत्मा–प्रकृति और परमात्मा के सम्बन्धों का विवेचन है।"[3] राधाकृष्ण ने लिखा है "हिन्दुओं के व्यवहारनियमों में कामनाओं के क्षेत्र को अनन्तत्व की सम्भावना के साथ जोड़ दिया है। उसने इहलौकिक और पारलौकिक तत्त्वों को साथ–साथ जोड़ दिया है।"[4] श्रीरंगस्वामी आयंगर का कहना है "एक अमानवीय स्रोत से समाज–व्यवस्था का सनातन आधार प्राप्त होने के कारण समाज–व्यवस्था दार्शनिक के क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाती है और दर्शनशास्त्र सामाजिक विचारक के क्षेत्र के अन्तर्गत। दर्शनशास्त्र के लेखक स्मृतियों को अधिकृत मान कर उनके उद्धरण देते हैं जबकि धर्मशास्त्र के लेखक मानव–सम्बन्धों और कर्तव्यों के आध्यात्मिक आधार का उल्लेख करते हैं। एक परमात्मवादी पद्धति में नैतिकता और दर्शन को पृथक किया जा सकता है।"[5]

भारतीय समाज–व्यवस्था दर्शन पर आधारित है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह केवल एक आदर्श की ही वस्तु रही है तथा उसका व्यावहारिक उपयोग नही रहा। धर्मशास्त्रों ने अपनी प्रत्येक व्यवस्था के व्यवहार पर पूरा जोर दिया है और उसे पालन करने की आवश्यकता बतायी है।[6] धर्मशास्त्रों ने श्रेष्ठ आदर्श स्थिति का वर्णन किया है, फिर भी व्यवहार की दृष्टि से जो उस आदर्श तक नहीं पहुँच सकते उनके लिये व्यवस्था की गयी है। इसी कारण चार वर्ण बनाये गये हैं, क्योंकि प्रत्येक वर्ण ब्राह्मण निर्धारित श्रेष्ठ जीवन का पालन नहीं कर सकता। ब्राह्मणों के लिये भी परिग्रह की अर्थात् दान लेने की निन्दा की गयी है फिर भी ब्राह्मणों की जीविका चलती रहे, इसके लिये उनकी वृत्ति के तीन साधनों में दान भी एक साधन है।[7] इस प्रकार आदर्श का ध्यान रखते हुए भी व्यावहारिकता को नष्ट नहीं किया गया है। धर्मशास्त्रों में यह व्यवस्था रखी गयी है कि प्रत्येक अपनी सर्वण भार्या से ही विवाह करे[8] और प्रतिलोम विवाह की तो बहुत निन्दा की गयी है[9] परन्तु फिर भी प्रतिलोम सम्बन्धों से उत्पन्न जातियों का वर्णन किया गया है और उन्हें समाज में (चाहे छोटा ही क्यों न हो) स्थान दिया गया है।[10] राधाकृष्ण ने भारतीय दर्शन पर विचार करते हुए लिखते हैं– "पश्चिम में दर्शन एक ऐसी वस्तु है जो कि दार्शनिकों के मस्तिष्क तक ही सीमित है। उसकी व्यावहारिक जीवन में कोई उपयोगिता नहीं है। भारत में दर्शन को व्यवहार में लाया गया है।" दर्शन और व्यवाहर का इतना श्रेष्ठ समन्वय है कि एक ओर जहाँ आदर्शवाद अपने चरम रूप में दिखाई देता है, दूसरी ओर व्यावहारिकता भी उतनी ही उत्कट है। जब व्यक्ति के सामने निर्गुण ब्रह्म से एकता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा जाता है, उस निर्गुण ब्रह्म से जो कि इन्द्रियों को अग्राह्य है और दृष्ट अनुभव से परे है, अथवा उस सम्पूर्ण

विश्व के अन्दर के सभी जड़ और चेतन तत्त्वों की मूलभूत एकता को सामने रख कर उसके आधार पर जीवन में व्यवहार करने की बात की जाती है तो यह एक ऐसा आदर्शवाद है जो केवल कल्पना की ही बात प्रतीत होती है। जब कि संन्यासी का और ब्राह्मण का ऐसा त्यागमय आदर्श सामने रखा जाता है जिसकी समता आज मिलना बहुत–ही दुर्लभ है, तब वह एक कोरा आदर्शवाद (Utopia) ही समझा जा सकता है। जब प्रत्येक गृहस्थ के दैनिक जीवन के लिये बहुत कड़ा अनुशासन निर्धारित किया गया है और उसके सम्पूर्ण दिन की बड़ी कड़ी दिनचर्या बताई गयी है तब यह विचार उठता है कि इस पर कभी व्यवहार भी किया जा सकता है अथवा नहीं? परन्तु दूसरी ओर व्यावहारिकता भी इतनी अधिक है कि मनु का यह कथन कि "न मांस खाने में दोष है, न मदिरा पीने में, न मैथुन में, क्योंकि यह प्राणियों की (स्वाभाविक) प्रवृत्ति है," साधारण नैतिकता में विश्वास रखने वाले व्यक्ति को अखर जाता है। राजधर्म में जब शत्रु के साथ व्यवहार करने के, अथवा राजपुत्रों को वश में रखने के, अथवा विभिन्न साधनों से धन प्राप्त करने के नियम बताये गये हैं, तब उन नियमों की अनैतिकता देख कर यह स्वाभाविक है कि साधारण व्यक्ति उन नियमों के प्रति हृदय में तुच्छ भावों को धारण करे। जब वेश्याओं के विषय में स्मृतिकारों ने नियम दिये है[11] तब उन स्मृतिकारों की समाज–व्यवस्था के प्रति निरादर का भाव उत्पन्न हो जाना बहुत–ही स्वाभाविक है। यह सत्य है कि भारत ने ऐसी समाज–व्यवस्था बनायी जिसके द्वारा धीरे–धीरे एक आदर्श स्थिति तक पहुँचने का प्रयत्न किया, परन्तु यह भी सत्य है कि व्यावहारिक जीवन की सभी कमियाँ और आवश्यकताएँ भी स्वीकार की गयीं और व्यावहारिक जीवन में परिपूर्णता निर्माण करते हुए मनुष्य के दार्शनिक लक्ष्य को भी व्यावहारिक स्वरूप देने का प्रत्यन किया गया।[12]

जहाँ तक भारतीय दर्शन का प्रश्न है, भारत में छः दर्शन विख्यात हैं। परन्तु वह दः दर्शन भी परस्पर–विरोधी नहीं हैं। भारत का 'दर्शन' शब्द 'दृश्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना' अतः दर्शन वह पद्धति है जिससे 'सत्य' का अथवा 'ब्रह्म' का साक्षात्कार किया जाये। इस दृष्टि से वह अंग्रेजी के Philosophy शब्द का पर्यायवाची नहीं हो सकता। मैक्समूलर जैमिनी की पूर्वमीमांसा को पश्चिमी दृष्टि से Philosophy नाम देने में हिचकता है क्योंकि उसमें वेद के कर्मकाण्ड –सम्बन्धी मन्त्रों का एकीकरण करने का प्रयत्न है फिर भी भारतीय दृष्टि से वह दर्शन ही है, क्योंकि उसमें कर्मकाण्ड के मार्ग से मनुष्य को ब्रह्म तक पहुँचने का मार्ग दिखाया गया है। मैक्समूलर ने यह स्वीकार किया है कि हमारी Philosophy की धारणा भारतीय दर्शन की धारणा से भिन्न है। इस भेद के कारण जहाँ पश्चिम में दर्शन की विभिन्न पद्धतियाँ परस्पर–विरोधी

हो सकती हैं, कम–से–कम सब स्वतन्त्र विचारधाराएँ रखती हैं, वहाँ भारत में ऐसा नहीं है। भारत में सभी एक सत्य को देखने के विभिन्न प्रकार–मात्र हैं जिनमें मूलतः कोई भेद स्वीकार नहीं किया जाता है।[13] विभिन्न दर्शनों के विषयों का विवेचन करने पर यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी। न्यायसूत्रों में तर्क के द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति (मोक्ष–प्राप्ति) का साधन बताया गया है। इन सूत्रों का प्रारम्भ यहीं से किया गया है कि निःश्रेयस् की प्राप्ति प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन आदि सोलह तत्त्वों के ज्ञान से होती है। इसमें आत्मा का अस्तित्व सिद्ध करते हुए तथा आत्मा अनित्य है यह बताते हुए कर्मफल की प्राप्ति का कारण ईश्वर को बता कर ब्रह्म का अस्तित्व सिद्ध किया गया है। वैशेषिक में आधिभौतिक तत्त्वों का विवेचन है और इस सबके मूल में ब्रह्म है तथा इनकी विवेचना से मोक्ष ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए यह दिग्दर्शित किया है। वैशेषिक सूत्रों में कणाद का कहना है[14] "द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, नामक पदार्थों के साधर्म्य और वैधर्म्य का तत्त्वज्ञान धर्म–विशेष (वैशेषिक) से उत्पन्न होने के कारण निःश्रेयसकारी है" और उसमें प्रारम्भ में धर्म को अभ्युदय तथा निःश्रेयसकारी बता कर इस सब धर्म के प्रमाण के रूप में वेद बताये गये हैं क्योंकि वे परमात्मा (ब्रह्म) के शब्द हैं। इतना ही नहीं इन सूत्रों में आत्मा की स्वीकृति है तथा यह कह कर कि इन्द्रियों के अनुभव सर्वगम्य न होने के कारण इन्द्रियों तथा उनकी अनुभूत वस्तुओं से परे भी कुछ है, ब्रह्म को स्वीकार किया गया है। न्याय में बुद्धि के द्वारा तथा वैशषिक में प्रत्यक्ष संसार के विवेचन से–अर्थात् दोनों पद्धतियों में भौतिक साधनों से–इस संसार से मुक्ति की विवेचना की गयी है।

धर्म वह साधन है जो मनुष्य द्वारा अर्थ और काम के उपभोग को मर्यादित करता हुआ उसे मोक्ष की ओर ले जाता है। इसीलिये धर्म की विशेषिक सूत्र में व्याख्या की गयी है "जिसके द्वारा अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हो वह धर्म है।"[15] इससे श्रेष्ठ और पूर्ण धर्म की व्याख्या हो ही नहीं सकती। वायुपुराण में भी धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है "स्मृतियों ने कुशल करने वाले कर्म को धर्म तथा अकुशल करने वाले कर्म को अधर्म बताया है। धर्म का धारणा और धृति अर्थ होने के कारण जो धारण करता है जिससे व्यवस्था बनी रहती है उसे धर्म कहा जाता है। जिससे धारणा नहीं होती और जिससे महत्व (सुयश अथवा सम्मान) प्राप्त नहीं होता उसे अर्धम कहते हैं। इस प्रसंग में आचार्य लोग उसे धर्म कहते हैं जिसके आचरण से इष्ट की प्राप्ति हो।"[16] इस व्याख्या में भी इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की कुशलता अथवा दोनों प्रकार की सिद्धि की ओर संकेत किया गया है। क्योंकि धर्म शब्द 'धारणा' का अर्थ व्यक्त करने

वाली 'धष' धातु से बना है इसलिये धर्म का यह भी भाव है कि उससे समाज की धारणा होती है। अर्थात् धर्म के आधार पर व्यक्ति तो अर्थ और काम का मर्यादित उपभोग करते हुए मोक्ष की ओर बढ़ता है परन्तु क्योंकि धर्म के द्वारा अर्थ और काम के उपभोग की मर्यादाएँ निश्चित रहती हैं इसलिये उसके द्वारा समाज के अन्दर व्यवस्था भी स्थापित होती है और अर्थ और काम के अनियंत्रित उपभोग से समाज में अधिाकाधिक प्राप्ति की लालसा के कारण उत्पन्न पारस्परिक प्रतियोगिता और संघर्ष रुक कर समाज के सुखी और समन्वयात्मक जीवन की व्यवस्था का साधन है। धर्मशास्त्रों में जिस धर्म का अर्थात् जिस समाज–व्यवस्था का वर्णन किया गया है वह ऐसा ही धर्म है जो अर्थ और काम के नियन्त्रित उपभोग की अनुमति देते हुए मनुष्य की वषत्ति मोक्ष की ओर मोड़ देता है और समाज–जीवन में व्यवस्था उत्पन्न करता है।

सन्दर्भ सूची

1. रंगस्वामी आंगर–हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ एकॉर्डिंग टु धर्मशास्त्राज, पृ.–254
2. मैकडोनल–हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर, पृ.–189
3. इण्डियन स्कीम ऑफ लाइफ, पृ.–83
4. रंगस्वामी आंगर–हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ एकॉर्डिंग टु धर्मशास्त्राज, पृ.–79
5. रंगस्वामी आंगर–हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ एकॉर्डिंग टु धर्मशास्त्राज, पृ.–25
6. मनुस्मृति, 1 ।108
7. मनुस्मृति, 1 ।17
8. आप० 2 ।6 ।13 ।1
9. मनु० 10 ।41, गौतम 4 ।20
10. याज्ञ० 1 ।91–96
11. कौटिल्य–अर्थशास्त्र अधिकरण 13, 1,1 ।7,5 ।2 शान्तिपर्व 140 अध्याय
12. मनुस्मृति 2 ।209
13. सिक्स सिस्टम्स ऑफ फिलॉसोफी, पृ.–197

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

14. न्यायसूत्र 1 ।1 ।1, 3,1 ।,19

15. महाभारत 1 । ।2

16. महाभारत 59—27—28

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/02

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अवधेष त्यागी एवं डॉ0 डॉ0 प्रियंका शर्मा

For publication of research paper title

"भारतीय दर्शन एवं सामाजिक दृष्टिकोण का दार्षनिक अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com